कहानी

विलन

- शहनाज ए.एस

लता अपने बच्चों को स्कूल भेजने की तैयारी में थी। रूहीं दूसरी कक्षा में थी और अमन किंडर गार्डन में। दोनों को तैयार करके वह कॉलेज के लिए निकल जाती है। रास्ते में एक कार उसके सामने आकर रुकी। अचानक वह डर गई। बदन पुरा कांप उठा। ट्रेन छूटने के ख्याल से वह दौड़ जा रही थी, मगर इस डर ने उसे धीमा कर दिया। कुछ सोच कर वह धीरे चलने लगी।

उसे एक क्षण लगा कि वह वही आदमी है, जिसने उसे और बच्चों को बेसहारा छोड़ दिया था। नहीं।

सच्चाई तो यही है कि उसने उस आदमी को छोड़ा था। थोड़ी देर धीमा पड़ने के बाद वह फिर तेजी से चलने लगी। रेलगाड़ी की तरह जिंदगी भी किसी के लिए रुकती नहीं। जिसको रेल गाड़ी मिलती है, वह आगे निकल जाता है। यदि गाड़ी छूट जाएगी तो बस में जाना होगा, तो वह जल्दी नहीं पहुंचेगी। इसलिए वह अपने मंजिल की ओर चलने लगी।

जब शादी हुई थी तो पढ़ाई कर रही थी। पढ़ाई पूरी की। काम करने लगी। हर मंशा उसकी पूरी हो गई थी। बीच में दो बच्चे भी खुशी बनकर आए तो सब कुछ सही था। बस फिर जब वह आ गया और सब तबाह हो गया। वही उसकी जिंदगी का विलन है।

जल्दी स्टेशन पहुंची और वह उतर गई। कॉलेज में बच्चों का शोर शराबा था। वह उस धुन में आगे बढ़ी और डिपार्टमेंट में चली गई। फिर क्लास वगैरह में दिन निकल गई।

शाम को वापस आते वक्त फिर वह सोचने लगी उसी दिन के बारे में जब उसके पति ने पहली बार उससे सवाल किया था कि वह 'कौन आदमी है जिसके साथ तुम्हारा रिश्ता है?' वह एक पल में टूट-फूटकर बिखर गई थी। जिसे वह अबतक सपने में भी सोचा नहीं वह बात उसने पूछा ली थी। वह कुछ नहीं बोली। बस चुप रही। उसकी ख़ामोशी इसलिए थी कल तक जिसे वह सबसे अच्छा दोस्त मानती थी, सारी चीज़ें जिसे बताती थीं, वह उससे ऐसा सवाल कर रहा है, ऐसे ही उसकी किरदार पर शक कर रहा था, जैसे वह एक सपना देख रही हो। कल तक जिसको उस पर इतना भरोसा था, वह आज सात साल बाद अचानक एक दिन में कैसे बदल गया...?

धीरे-धीरे उसका बदलता रूप देखने लगी। हर दिन शक और चेकिंग। जब-जब वह ऐसा करता था, उसने सोचा कि ठीक हो जाएगा, पर हर रोज़ कोई न कोई नया तमाशा खड़ा हो जाता

था, एक साल और तीन साल की नन्हीं सी जान के सामने, शहर के उस घर में अकेली पड़ जाने लगी। पति रात-रात भर घर से बाहर रहने लगा, वह रातें अकेली काटने लगी।

फिर किसी वज़ह से उसे गांव आना पड़ा तो उसने पति से कहा कि काउन्सलर के पास चलते हैं। कहते ही उसने कहा कि मुझे 'पागल' बनाना चाहती हो क्या। उसे हर कीमत यकीन नहीं हो रहा था कि यह वही आदमी है जिसने उस पर इतना भरोसा किया था।

कुछ दिन बाद वह शहर लौट गया और लता गांव में रही। अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई। जैसे वह रातों में गायब रहता था, वैसे उसका फोन भी बंद आ रहा था। मायके से लोग आ गए और लता उसे बताए बिना मायके चली गई।

जब पति को पता चला तो वह बहुत गुस्सा हो गया है और पूरे परिवार से लता के किरदार के बारे में अनाप-शनाप बकने लगा। सब लोगों ने लता पर शक किया। यहां तक कि उसके घर वालों ने भी।

उन सबको लगा कि कुछ न कुछ तो ज़रूर रहा होगा, वरना कोई पति बेकार उंगली नहीं उठाएगा।

बात जब मारने पीटने तक आ गई तो यह बात मायके वालों ने बर्दाश्त नहीं किया और कहा कि आज के बाद यहां कदम मत रखना।

वह चला गया उसके बाद उसे वह कभी नहीं मिला, न उसने मिलने की कोशिश की।

ट्रेन रुकी और वह उतर गई। घर पहुंच गई तो देखा की बच्चे स्कूल से वापस आ चुके थे। बच्चों की पढ़ाई वगैरह देखने के बाद वह सोने चली गई। बच्चे सो गए थे मगर उसको नींद नहीं आई।

वह फिर सोचने लगी उस वक्त उसके मन में उम्मीद थी शायद फिल्मों में जैसा होता है वैसे कहीं से उसे सच का पता चल जाए कि वह बेकसूर है और ऐसे में वह आकर उससे माफी मांगेगा, और सबकुछ ठीक हो जाएगा, फिर वह कभी कोई गलती नहीं करेगा, और एक बार फिर परिवार बसेगा।

लेकिन सच कहो तो जिंदगी का सुखांत होना मात्र नामुमकिन है, यह बात समझते-समझते साल भर बीत गई।

अब उस बात के हुए तीन साल बीत गए। हाल ही में उसके एक दोस्त से मुलाकात हुई थी। उसने कहा था कि शरद को शहर में बड़ी ड्रग गैंग की लत लग गई है। वही उसे ऐसा बनाया है। वरना वह आदमी ऐसा कभी नहीं था। लेकिन जो भी हो वह आज तक नहीं बदला है। उसे आज भी लगता है कि लता बेवफ़ा है। क्या ड्रग में इतनी भी ताकत होती है कि वह किसी इंसान की सोच ही बदल डाले..? उसने उसपर खोज की तो पता चला कि किसी किसी के सोच को इस

तरह बदल देने की शक्ति उसमे होती है। लता को आश्चर्य हो रहा था। वह तो हमेशा ड्रग का मतलब नशे में दुथ होकर आड़े टेड पैरों में खड़ा न हो पाना ही था। ऐसा तो कभी उसने शरद को नहीं देखा था। उसे पता भी नहीं था कि शरद ऐसा भी कुछ कर रहा था। ना तो उससे कोई महक आता था ना उसमें कुछ बदलाव दिखता था। शायद सात सालों से ही वह इस नशे की लत में था इसलिए उसके हर हरकत को उसका स्वभाव समझ रही थी।

जब उसने घरवालों से कहा कि शरद को नशे की लत थी तो उन सभी लोगों ने एक ही सवाल किया। तुम क्यों उसको काबू नहीं कर पाई..? जब उसने सवाल उठाया तब भी लोगों ने लता को ही गलत माना था। जब ड्रग की बात सामने आई तो लोगों को ऐसा लगा कि शरद को उससे न बचा पाना भी लता की गलती है। गलती गूम फिरकर उसपर ही क्यों आती है। सवाल उससे ही क्यों पूछी जाती है। किसीकी हिम्मत नहीं थी की कोई उससे पूछे कि तुमने क्यों किया। अच्छा हुआ नहीं पूछा।। वरना बातों में वह इतना माहिर था कि फिर एक बार लता को बुरा बना देता।

वह सोच में पड़ गई कि उसकी जिंदगी का विलन शरद था या ड्रग..? हम एक बेजान चीज़ को क्यों कोसे? जब जीते-जाते आदमी को पता नहीं होता है कि मज़े के लिए वह कितनों की जिंदगी बर्बाद कर रहा है।

विलन चाहे जो भी हो लता को अब फर्क नहीं पड़ता था। वह जिंदगी की कड़वी घूंट पी चुकी थी। और उसे पता था कि असल जिंदगी में विलन को खत्म करके हमें बचाने के लिए कोई हीरो नहीं आता है। हीरो वह खुद है, कोई दूसरा नहीं।

शहनाज ए.एस, Assistant professor (Guest)

RUSA Govt. Model College, Mananthavadi, Wayanad

G-Mail: shahanaz.as2025@gmail.com